



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 125]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 17, 2009/आषाढ़ 26, 1931

No. 125]

NEW DELHI, FRIDAY, JULY 17, 2009/ASADHA 26, 1931

भारतीय रिजर्व बैंक
अधिसूचना

मुम्बई, 13 जुलाई, 2009

भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 58 की उपधारा (2) के खंड (थ) तथा उपधारा (1) के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 28 के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा भारतीय रिजर्व बैंक (नोट वापसी) नियमावली 1975 के अधिक्रमण, करने इस तथा इससे पहले की गयी या करने के लिए छोड़ दी गयी बातों को छोड़कर, भारतीय रिजर्व बैंक का केन्द्रीय निदेशक बोर्ड, केन्द्रीय सरकार की पूर्व अनुमति से इसके द्वारा उन परिस्थितियों तथा उन शर्तों और सीमाओं को निर्धारित करते हुए निम्नलिखित नियम बनाता है, जिनके अंतर्गत खोये, अपूर्ण या कटे-फटे नोटों का मुल्य अनुग्रह के रूप में वापस किया जा सकता है अर्थात्

1. लघु शीर्ष, प्रयोग और प्रारंभ :-

- (1) इन नियमों को भारतीय रिजर्व बैंक (नोट वापसी) नियमावली 2009 कहा जायेगा ।
- (2) ये नियम, उस नोट के लिए लागू होंगे, जो बैंक के समक्ष उसकी प्रस्तुति की तारीख पर वैध मुद्रा है ।
- (3) ये सरकार के राजपत्र में उसके प्रकाशन की तारीख पर अमल में आयेंगे ।

2. परिभाषाएं :

इन नियमों में जब तक इस संदर्भ को अन्यथा आवश्यक नहीं माना जाता :-

(क) "अधिनियम" से अभिप्राय भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 की धारा 2) है;

(ख) "बैंक" से अभिप्राय अधिनियम की धारा 2 द्वारा गठित भारतीय रिजर्व बैंक से है;

(ग) "बैंक नोट" से अभिप्राय बैंक द्वारा जारी किये गये किसी नोट से है, परन्तु उसमें एक रुपये का नोट जिसे भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक सेवा विभाग द्वारा जारी 28 मार्च 1980 की अधिसूचना सं.जी.एल.आर. 426 के अनुसार बैंक नोट माना गया है, के अलावा अन्य सरकारी नोट सम्मिलित नहीं है;

(घ) "आवश्यक लक्षणों" से अभिप्राय सुरक्षा विशेषताओं सहित उन लक्षणों से है जो किसी नोट की पहचान के लिए आवश्यक हैं, अर्थात् :-

- (i) जारी करनेवाले प्राधिकारी अर्थात् यथास्थिति, भारतीय रिजर्व बैंक या भारत सरकार का नाम हिन्दी या अंग्रेजी में;
- (ii) प्रतिभूति (गारंटी) खंड हिन्दी और/या अंग्रेजी में;
- (iii) वचन खंड हिन्दी और/या अंग्रेजी में;
- (iv) हस्ताक्षर हिन्दी और/या अंग्रेजी में;
- (v) यथास्थिति अशोक स्तम्भ का चिह्न या महात्मा गांधी की प्रतिमा; और
- (vi) यथास्थिति अशोक स्तम्भ या महात्मा गांधी की प्रतिमा के प्रतीक का जलचिह्न (वाटरमार्क)

स्पष्टीकरण : इस खंड के उद्देश्यों के लिए -

(क) नोट की वास्तविकता या अन्यथा निर्धारण करने के लिए, निम्नलिखित सुरक्षा विशेषताएं शामिल हैं;

- (i) कागज की गुणवत्ता
- (ii) संख्या पटल की संख्याओं का माप एवं आकार
- (iii) सुरक्षा धागा

- (iv) उभारदार (intaglio) मुद्रण
- (v) उर्ध्वाधार पट्टी में अप्रकट छवि
- (vi) इलेक्ट्रोटाईप जलचिन्ह (वॉटरमार्क विंडो में)
- (vii) सूक्ष्म लेखन (मायक्रोलेटरिंग)
- (viii) चमकीलापन (संख्या पट्टियों और मुख्य मध्य पट्टी)
- (ix) प्रकाश में परिवर्तनीय स्याही (पाच सौ रु. और एक हजार रु. मूल्यवर्ग के नोटों में)
- (x) दोनों ओर छपे चिह्नों का सटीक मेल
- (xi) बैंक द्वारा भविष्य में कोई अन्य सुरक्षा विशेषता

(ख) नोट की आवश्यक विशेषताएं, नियत अधिकारी को किसी कटे-फटे नोट की वास्तविकता या अन्यथा निर्धारण करने में सहायता की दृष्टि से बतलाई गयी हैं;

(ड.) "सरकारी नोट" से अभिप्राय उस नोट से है, जो भारत सरकार द्वारा जारी किया गया अथवा भारत सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक को दिया गया हो और बैंक ने उसे जारी किया हो, बशर्ते ऐसे नोट के संबंध में मूल्य की अदायगी की देयता बैंक पर डाल दी गयी हो और बैंक ने ले ली हो।

(च) "अपूर्ण नोट" से अभिप्राय ऐसे किसी नोट से है, जो पूर्णतः या अंशतः विरूपित, सिकुड़ा हुआ, गीले होने के कारण फीका हुआ, परिवर्तित या अस्पष्ट हो, परंतु इसमें कटा-फटा नोट सम्मिलित नहीं है।

(छ) "कटे-फटे नोट" से अभिप्राय ऐसा नोट से है जिसका एक भाग न हो या जो दो टुकड़ों से अधिक टुकड़ों को जोड़कर बनाया गया हो;

(ज) "बेमेल नोट" से अभिप्राय ऐसे कटे-फटे नोट से है जो किसी एक नोट के आधे भाग को किसी दूसरे नोट के आधे भाग में जोड़कर बनाया गया हो ।

स्पष्टीकरण: इस संबंध में संदेह को दूर करने के लिए एतद्वारा यह बताया जाता है कि "बेमेल नोट की पहचान संख्या, हस्ताक्षर आदि और / या अन्य सुरक्षा विशेषताओं की जांच करने के बाद की जा सकती है;

(i) "नोट" से बैंक नोट या सरकारी नोट अभिप्रेरित है:

(ii) "निर्दिष्ट अधिकारी" से अभिप्राय बैंक के निर्गम विभाग के किसी अधिकारी या इस सम्बन्ध में बैंक द्वारा, करार के माध्यम से, उस के किसी एजेंट/नामित बैंक का कोई अधिकारी जिसे नोट वापसी नियमावली के अंतर्गत अधिनिर्णय हेतु कटे-फटे नोटों को स्वीकारने के लिए प्राधिकृत किया गया है ।

(झ) "गंदे नोट" से अभिप्राय ऐसे नोट से है, जो प्रयोग के कारण गंदा हुआ हो और इसमें आपस में जुड़े दो टुकड़े नोट भी शामिल हैं जहाँ प्रस्तुत किये गये दोनो टुकड़े एक ही नोट के हो और इस तरह पूर्ण नोट बनाते हों ।

2. इसमें प्रयुक्त ऐसे शब्द और अभिव्यक्ति जिन्हें यहाँ परिभाषित नहीं किया गया है परन्तु अधिनियम (एक्ट) में वे परिभाषित हैं उनके लिए वही अर्थ निहित होंगे जैसा कि अधिनियम में है।

3. कटे-फटे नोट के अधिनिर्णय से संबंधित निर्णय - कटे-फटे नोट के अधिनिर्णय के संबंध में यदि कोई विवाद हो तो तो उसे निर्णय के लिए 'बैंक' को भेजना चाहिए और इसका निर्णय दावेदार, उसके नामिती और उत्तराधिकारियों के लिए बाध्यकारी होगा ।

4. दावे की प्रस्तुति और निपटान - किसी भी नोट के संबंध में दावा, इन नियमों के अंतर्गत अधिनिर्णय एवं मूल्य के भुगतान के लिए निर्दिष्ट अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है।

5. जानकारी मांगने या जांच करने का अधिकार - निर्दिष्ट अधिकारी, यदि आवश्यक समझे तो, इन नियमों के अंतर्गत उसके समक्ष प्रस्तुत किये गये किसी दावे के संबंध में कोई जानकारी मांग सकता है या जांच कर सकता है, और जहाँ नोट की वास्तविकता संदिग्ध हो, तो ऐसे संदिग्ध नोट को वह विशेषज्ञ मत के लिए महाप्रबंधक, करेंसी नोट प्रेस, नासिक रोड या इस उद्देश्य के लिए लागू किसी विधि के अंतर्गत यथानामित किसी अन्य प्राधिकारी के पास भेजेगा।

6. सभी दावों के सम्बन्ध में सामान्य उपबंध -

- (1) किसी ऐसे नोट, जो चोरी हो गया है, खो गया है, या पूर्णतः नष्ट हो गया हो, के संबंध में कोई दावा स्वीकार नहीं किया जायेगा।
- (2) निर्दिष्ट अधिकारी यदि इस बात से संतुष्ट हो कि उसके समक्ष प्रस्तुत किया गया कटा - फटा नोट भारतीय रिजर्व बैंक के किसी कार्यालय में निरस्त (रद्द) किया जा चुका प्रतीत हो तो है अथवा किये गये दावा का भुगतान इन नियमों के अन्तर्गत पहले ही किया जा चुका प्रतीत होतो वह, उपर्युक्त नियम 5 के अंतर्गत पूछताछ के पश्चात्, ऐसे नोट पर किये गये दावे का भुगतान करने से मना कर सकता है।
- (3) उस नोट के संबंध में दावा जिसे
 - (i) निश्चित रूप से ऐसे वास्तविक नोट के रूप में नहीं पहचाना जा सके जिसका दायित्व अधिनियम के अंतर्गत बैंक पर है।
 - (ii) अपूर्ण बनाया गया हो या इस उद्देश्य से काटा-फाड़ा गया हो कि वह उच्चतर मूल्य वर्ग का प्रतीत हो या इन नियमों के अंतर्गत या अन्यथा झूठा दावा प्रस्तुत करने के उद्देश्य से या बैंक या जनता को धोखा देने के लिए जान-बूझकर काटा-फाड़ा गया हो, विकृत किया गया

2632 4109-2

हो, परिवर्तित किया गया हो या किसी अन्य तरीके से उस पर कार्रवाई की गयी हो; यह आवश्यक नहीं है कि दावेदार ने स्वयं ऐसा किया हो ।

(iii) जिसपर आपत्तिजनक शब्द लिखे हों या किसी राजनीतिक या धार्मिक स्वरूप का संदेश देने या देने में सक्षम भाव को व्यक्त करने वाली दृष्टब्य अभिव्यक्ति हो या किसी व्यक्ति या उद्यम के हित को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कुछ लिखा गया हो ।

(iv) दावेदार द्वारा किसी कानून के प्रावधान का उल्लंघन करके भारत से बाहर के किसी स्थान से लाया गया हो ।

(v) निर्दिष्ट अधिकारी अथवा बैंक द्वारा मांगी गयी कोई सूचना, जो लागू हो, दावेदार ने सूचना मांगने की नोटिस या पत्र की प्राप्ति की तारीख से तीन महीने के अंदर प्रस्तुत न की हो, या

(vi) निर्दिष्ट अधिकारी के अभिमत के अनुसार ऐसे दावे के संबंध में जहाँ जानबूझकर धोखाघड़ी करने का आशय प्रतीत होता हो, अस्वीकृत किया जायेगा और उस समय में लागू किसी अन्य नियम के तहत विचार करने के लिए पात्र नहीं होगा।

7. अपूर्ण नोट - अपूर्ण नोट के लिए नियम 8 में दी गयी सारणियों में निर्दिष्ट किए गए अनुसार पूरा / आधा मूल्य अदा किया जा सकता है , यदि,

(क) वह विषयवस्तु, जो नोट पर मुद्रित है पूरी तरह से अपठनीय न हो गयी हो, और

(ख) नोट पर पठनीय विषयवस्तु के आधार पर निर्दिष्ट अधिकारी इस बात से संतुष्ट हो कि वह असली नोट है

8. कटे-फटे नोट - (1) एक रुपये, दो रुपये, पाँच रुपये, दस रुपये और बीस रुपये मूल्यवर्ग के नोटों के संबंध में दावे का अधिनिर्णय निम्नलिखित पद्धति से किया जाएगा अर्थात्,

i) यदि प्रस्तुत किये गये नोट के सबसे बड़े एक अविभाजित टुकड़े का क्षेत्र अगले पूर्ण वर्ग सेंटीमीटर में पूर्णकृत करने पर संबंधित मूल्यवर्ग के नोट के कुल क्षेत्र से 50 प्रतिशत से अधिक हो, तो उपर्युक्त मूल्यवर्गों के कटे-फटे नोटों का पूर्ण मूल्य देय होगा;

ii) यदि प्रस्तुत किये गये नोट के सबसे बड़े अविभाजित टुकड़े का क्षेत्र 50 प्रतिशत से कम अथवा बराबर हो तो दावे को अस्वीकृत किया जायेगा।

स्पष्टीकरण: इस उप-नियम के लिए यह स्पष्ट किया जाता है कि एक रुपये, दो रुपये, पाँच रुपये, दस रुपये और बीस रुपये मूल्यवर्ग के कटे-फटे नोट के पूर्ण मूल्य का भुगतान तभी किया जा सकता है, जब यदि प्रस्तुत नोट का सबसे बड़ा टुकड़ा निम्न सारणी में दर्शाये गये अनुसार क्रमशः 31, 34, 38, 44, और 47 वर्ग सेंटीमीटर से अधिक हो अथवा उसके बराबर हो।

सारणी -1

मूल्यवर्ग	लंबाई (सेंटीमीटर)	चौड़ाई (सेंटीमीटर)	क्षेत्र (सेंटीमीटर में)	भुगतान के लिए आवश्यक न्यूनतम क्षेत्र (सेंमी.में रु)*
1	9.7	6.3	61	31
2	10.7	6.3	67	34
5	11.7	6.3	74	38
10	13.7	6.3	86	44
20	14.7	6.3	93	47

* प्रत्येक मूल्यवर्ग में नोटों के क्षेत्र के आधे के बाद अगले पूर्ण अधिक वर्ग सेंटीमीटर के रूप में दर्शाया गया है।

(2) पचास रुपये और अधिक मूल्यवर्गों के नोटों के संबंध में दावे का भुगतान निम्नलिखित पद्धति से किया जायेगा, अर्थात् -

i) यदि प्रस्तुत नोट का सबसे अविभाजित टुकड़ा अगले पूर्ण वर्ग सेंटीमीटर में पूर्णकृत करने पर संबंधित मूल्यवर्ग के नोट के क्षेत्र से 65 प्रतिशत से अधिक हो तो उपर्युक्त मूल्यवर्गों के कटे-फटे नोटों का पूर्ण मूल्य देय होगा;

ii) यदि प्रस्तुत नोट के सबसे बड़े अविभाजित टुकड़े का अविभाजित क्षेत्र अगले पूर्ण वर्ग सेंटीमीटर में पूर्णकृत करने पर संबंधित मूल्यवर्ग के क्षेत्र के 40 प्रतिशत से अधिक और 65 प्रतिशत से कम अथवा समान हो तो नोट का आधा मूल्य देय होगा ।

iii) यदि नोट के सबसे बड़े अविभाजित टुकड़े का क्षेत्र 40 प्रतिशत से कम हो तो कोई मूल्य देय नहीं होगा और दावे को अस्वीकृत किया जायेगा ।

iv) यदि पचास रुपये से एक हजार रुपये मूल्यवर्ग तक कटे-फटे नोटों के दावे में प्रस्तुत नोट को उसी नोट के दो टुकड़ों से बनाया गया हो और प्रत्येक टुकड़े का क्षेत्र, अलग-अलग, उस मूल्यवर्ग के नोट के कुल क्षेत्र का 40 प्रतिशत से अधिक अथवा समान हो तो दावे का पूर्ण भुगतान किया जाये और इसे आधे मूल्य के लिए प्रस्तुत दो दावे के रूप में नहीं समझा जाए ।

स्पष्टीकरण : इस उप-नियम के लिए निम्न सारणी-2 में दर्शाये गये अनुसार यह स्पष्ट किया जाता है कि

- (क) यदि प्रस्तुत किये गये पचास रुपये, एक सौ रुपये, पाँच सौ रुपये और एक हजार रुपये के कटे-फटे नोट के सबसे बड़े अविभाजित टुकड़े का क्षेत्र, कम से कम क्रमशः 70, 75, 80 और 84 वर्ग सेंटीमीटर हो तो उसके लिए पूर्ण मूल्य अदा किया जा सकता है ।
- (ख) यदि, सबसे बड़े अविभाजित टुकड़े का क्षेत्र ऊपर उल्लिखित से कम हो तो उपरिनिर्दिष्ट उप-नियम 8 के खण्ड 2(ii) के अनुसार आधे मूल्य के भुगतान के लिए दावे पर विचार किया जा सकता है ।
- (ग) यदि पचास रुपये, एक सौ रुपये, पाँच सौ रुपये और एक हजार रुपये के प्रस्तुत किये गये कटे-फटे नोट के सबसे बड़े अविभाजित टुकड़े का क्षेत्र क्रमशः कम से कम 43, 46, 49 और 52 वर्ग सेंटीमीटर हो तो ऐसे नोटों का मूल्य आधे मूल्य के रूप में अदा किया जा सकता है ।
- (घ) यदि एक ही बड़े अविभाजित टुकड़े का क्षेत्र उपर्युक्त विनिर्देश से कम हो तो दावे को अस्वीकृत किया जायेगा ।

सारणी - 2

मूल्यवर्ग	लंबाई (सेमी)	चौड़ाई (सेमी)	क्षेत्र (सेमी) में	पूर्ण मूल्य@	आधे मूल्य** के भुगतान हेतु आवश्यक न्यूनतम क्षेत्र (सेमी में)
50	14.7	7.3	107	70	43
100	15.7	7.3	115	75	46
500	16.7	7.3	122	80	49
1000	17.7	7.3	129	84	52

@ प्रत्येक मूल्यवर्ग में नोट के क्षेत्र के 65 प्रतिशत से अगले पूर्ण उच्च वर्ग सेंटीमीटर में पूर्णकृत ।

** प्रत्येक मूल्यवर्ग में नोट के क्षेत्र के 40 प्रतिशत से अगले पूर्ण उच्च वर्ग सेंटीमीटर में पूर्णकृत अथवा नोट का 40 प्रतिशत ।

9. बेमेल नोट के संबंध में दावे का भुगतान - बेमेल नोट के संबंध में दावे के भुगतान पर निम्न प्रकार से कार्रवाई की जाये -

- (क) बीस रुपये मूल्यवर्ग तक के नोटों के मामले में प्रस्तुत किये गये दो टुकड़ों में से बड़े टुकड़े का क्षेत्र नापा जाये और छोटे आधे टुकड़े पर ध्यान न देते हुए नियम 8 के उप-नियम (1) के प्रावधानों के अनुसार अधिनिर्णय किया जाये ।
- (ख) यदि प्रस्तुत किये गये दोनों टुकड़ों में से कोई भी टुकड़ा उपर्युक्त नियम 8 के उप-नियम 1 के खण्ड (i) के प्रावधानों के अनुसार निर्धारित न्यूनतम क्षेत्र को पूरा नहीं करता हो, तो दावे को अस्वीकृत किया जाये ।
- (ग) पचास रुपये और उससे अधिक मूल्यवर्गों के मामले में दोनों टुकड़ों को अलग-अलग रूप में माना जाये और तदनुसार कार्रवाई की जाये ।

10. दावेदारों पर नियम बाध्यकारी होंगे -

- (1) इन नियमों के अंतर्गत जो भी अदायगी की जायेगी वह केवल अनुग्रह के रूप में होगी और बैंक यदि समय-समय पर, इन नियमों के उपबन्धों को अमल में लाने के लिए निर्दिष्ट अधिकारियों के मार्गदर्शन के लिए ऐसे अनुपूरक और विस्तृत अनुदेश जारी कर सकता है, जिन्हें वह उचित समझे ।
- (2) यदि कोई व्यक्ति जो किसी अपूर्ण या कटे-फटे नोट के संबंध में दावा करेगा, यह माना जाएगा कि उसने वह दावा भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम की धारा 28 के प्रावधानों के अंतर्गत और इन नियमों

26324 मॉर् 3

के उपबन्धों के अधीन किया है, जो सभी दावेदारों और उनके उत्तराधिकारियों या नामित व्यक्तियों पर बाध्यकारी होंगे।

11. **नोट को रख लेना और नष्ट करना :** निर्दिष्ट अधिकारी के समक्ष दावे के उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया नोट, चाहे वह किसी मूल्यवर्ग का हो अथवा दावे के संबंध में निर्दिष्ट अधिकारी का निर्णय कुछ भी हो, रख लिया और नष्ट कर दिया जायेगा अथवा बैंक द्वारा उसका निम्न प्रकार से अन्यथा निपटान किया जाएगा।

(क) किसी ऐसे नोट के मामले में, जिसके संबंध में पूरी अदायगी कर दी गयी है अदायगी के पश्चात् किसी भी समय; और

(ख) किसी ऐसे नोट के मामले में जिसके सम्बन्ध में कोई अदायगी नहीं की गयी है, या जिसपर आधे मूल्य की अदायगी की गई है, दावे को अस्वीकार करने या आधे मूल्य की अदायगी जो लागू के निर्णय की तारीख से तीन महीने की अवधि समाप्त होने है हो यदि इस अवधि के दौरान, बैंक के किसी कार्यालय या किसी नामित बैंक की शाखा को किसी सक्षम न्यायालय से, उल्लिखित नोट को नष्ट करने या उसके अन्यथा निपटान से रोकने का कोई आदेश प्रस्तुत नहीं किया जाता है।

12. वैध उत्तराधिकारियों/नामितों को अदायगी -

(1) यदि किसी दावेदार जिसने इन नियमों के अंतर्गत दावा प्रस्तुत किया हो, की मृत्यु हो जाती है तो उसके वैध उत्तराधिकारी, निर्दिष्ट अधिकारी द्वारा दावे का मूल्यांकन करने के आधार पर दावेदार को देय राशि का भुगतान प्राप्त करने के योग्य होंगे।

(2) वैध उत्तराधिकारी इस उद्देश्य के लिए निर्दिष्ट अधिकारी को वैध प्रतिनिधि द्वारा शाखा या बैंक के किसी कार्यालय या बैंक द्वारा नामित किसी अन्य संस्था या ईकाई के पक्ष में निष्पादित क्षतिपूर्ति बॉर्ड प्रस्तुत करने पर, दावेदार को देय भुगतान, यदि कोई हो तो, को प्राप्त करने का हकदार होगा।

दावेदार के वैध उत्तराधिकारी को पाँच सौ रुपये तक की राशि का भुगतान इस उद्देश्य के लिए प्रस्तुत घोषणा के आधार पर किया जा सकता है।

(3) ट्रिपल लॉक रीसेप्टकल (टीएलआर) कवर के माध्यम से बैंक में प्रस्तुत कटे-फटे नोट के मामले में, प्रस्तुतकर्ता को कवर पर यथानिर्दिष्ट अन्य ब्यौरे जैसे कि बैंक खाता संख्या आदि के साथ अपना नाम और

पता लिखना होगा। इसके अलावा व्यक्तिगत प्रस्तुतकर्ता, अपने विकल्प के अनुसार कवर पर नामिती का नाम और पता भी लिख सकता है जो उचित पहचान के अधीन क्षतिपूर्ति बांड को प्रस्तुत किये बिना दावे पर देय हेतु निर्धारित की जानेवाली राशि प्राप्त कर सकता है।

(13) मुद्रित फार्म - नियम 12 में निर्दिष्ट किए अनुसार, जहाँ बैंक के पक्ष में किसी क्षतिपूर्ति बांड का निष्पादन किया जाना हो, वहाँ बैंक इस नियमावली के अंतर्गत वैसे दावेदार को या अदायगी प्राप्त करने के लिए पात्र व्यक्ति को बांड की एक मुद्रित प्रति निःशुल्क प्रदान करेगा।

(14) मुद्रांक शुल्क - क्षतिपूर्ति बांड पर लगाये जाने वाले किसी मुद्रांक (स्टांप) का मूल्य बांड निष्पादित करने वाले व्यक्ति द्वारा देय होगा।

15. आदाता (पानेवाला) का पता न लगने पर अपनायी जानेवाली प्रक्रिया - (1) भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यालयों में अधिनिर्णित किये गये नोटों के मामले में, जहाँ नोट का मूल्य या मूल्य का भाग दावेदार को देय (2), निर्दिष्ट बैंक की शाखा अथवा अन्य इकाईयों में, अधिनिर्णित कटे-फटे नोट के मामले में, निर्णय की सूचना दिए जाने की तारीख से तीन माह की अवधि के भीतर यदि प्रस्तुतकर्ता, राशि प्राप्त करने के लिए कोई कदम न उठाए तो ऐसी राशि बैंक के निर्गम कार्यालय में जमा की जाएगी।

उषा थोरात

(उषा थोरात)
उप-गवर्नर
भारतीय रिजर्व बैंक
केंद्रीय कार्यालय
केंद्रीय कार्यालय भवन
फोर्ट, मुंबई-400 001

म. राजेश्वर राव, महाप्रबन्धक
[विज्ञापन-III/4/असल/93/09]

भारतीय रिजर्व बैंक (नोट वापसी) नियमावली, 2009

भाग I

रिजर्व बैंक अपने सभी निर्गम कार्यालयों तथा वाणिज्य बैंकों की मुद्रा तिजोरी शाखाओं में कटे-फटे और विरूपित नोट बदलने की सुविधा जनता को प्रदान करता है। नोट वापसी नियमावली को समझने एवं उसके प्रयोग को आसान बनाने के लिए, इन नियमों में व्यापक स्तर पर संशोधन कर उन्हें सरल बनाया गया है। यह भी निर्णय लिया गया है कि नामित शाखा का कोई भी अधिकारी संबंधित शाखा में प्रस्तुत कटे-फटे नोटों का अधिनिर्णय कर सकता है। यह आशा की जाती है कि नियमों का सरलीकरण और उदारीकरण निर्दिष्ट अधिकारी एवं विरूपित नोटों के प्रस्तुतकर्ता, दोनों के लिए, संशोधित नियमावली को समझने और निर्दिष्ट अधिकारी को इसे निष्पक्ष रूप से लागू करने के लिए सहायक होगा।

जबकि गंदे नोटों के विनियम की सुविधा, सभी बैंकों द्वारा उनकी सभी शाखाओं में प्रदान की जानी है, कटे-फटे नोटों के विनियम की सुविधा, नामित बैंक शाखाओं (सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक सहित) में सभी निविदाकारों के लिए, चाहे उस बैंक में उनका खाता है या नहीं उपलब्ध होगी। जनता के प्रति समग्र रूप से पूरी बैंकिंग प्रणाली की यह एक जिम्मेदारी है। यह कहना अनावश्यक है कि भारतीय रिजर्व बैंक नोट वापसी नियमावली के सरलीकरण और उसके विस्तार का उद्देश्य आम जनता को उनके कटे-फटे नोटों को बिना किसी कठिनाई के विनिमय में सहायता करना है। नामित बैंक शाखाओं को सक्रिय रूप से कार्य करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह सुविधा सामान्य रूप से आम जनता के हित के लिए प्रदान की जाए और किसी व्यक्तिसमूह द्वारा इसका अतिक्रमण न होने पाए।

इस पुस्तिका में योजना के अंतर्गत पालन किये जानेवाले नियम और अपनायी जानेवाली क्रियाविधि सम्मिलित है। शीघ्र और आसानी से बोध हो सके, इसके लिए महत्वपूर्ण नियम परिवर्तित किये गये हैं। कटे-फटे नोट स्वीकार करने, उनका अधिनिर्णय और भुगतान करने, के संबंध में शाखाओं द्वारा अपनायी जानेवाली क्रियाविधि इस पुस्तिका में दी गयी है। इस संबंध में आगे दिए जानेवाले अनुदेश, इस पुस्तिका के संदर्भ में

होंगे और बैंकों की शाखाएं, पुस्तिका में आवश्यक संशोधन करते हुए इसे अद्यतन करेंगी। यदि इस योजना के बारे में कोई स्पष्टीकरण चाहिए हो तो उसके बारे में भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यालयों में निर्गम विभागों को या मुख्य महाप्रबंधक, मुद्रा प्रबंध विभाग, भारतीय रिजर्व बैंक, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई-400 001 को लिखा जाये। ई-मेल पत्ता cgmincdcm@rbi.org.in or helpdcm@rbi.org.in

भाग II:

भारतीय रिजर्व बैंक (नोट वापसी) नियमावली, 2009 स्पष्टीकरण सहित

अ. भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 के उपबंध:

धारा 28: किसी अधिनियमित या विधि-नियम में किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी कोई व्यक्ति केंद्र सरकार या रिजर्व बैंक से किसी खोये हुए, चोरी किये गये, विकृत या अपूर्ण करेन्सी-नोट या बैंक-नोट का मूल्य अधिकारेण प्रत्युद्धृत करने का हकदार नहीं होगा। परन्तु रिजर्व बैंक, केंद्रीय सरकार की पूर्व मंजूरी से वे परिस्थितियाँ जिनमें वो शर्तें और परिसीमाएँ विहित कर सकेगा, जिनके अधीन, ऐसे करेन्सी-नोटों या बैंक-नोटों का मूल्य अनुग्रह स्वरूप प्रतिदत्त किया जा सकेगा, और इस परन्तुक के अधीन बनाये गये नियम संसद के पटल पर रखे जायेंगे।

धारा 58(1): केन्द्रीय बोर्ड, इस अधिनियम के उपबन्धों को प्रभाव देने के लिए जिन विषयों के लिए उपबन्ध करना आवश्यक या सुविधाजनक है उन सबके लिए ऐसे विनियम, जो अधिनियम से संगत हैं, केंद्रीय सरकार की पूर्व मंजूरी से राजपत्र में अधिसूचना द्वारा बना सकेगा।

धारा 58(2): विशिष्टतया और पूर्वगामी उपबन्ध की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसे विनियम निम्नलिखित सब विषयों या उनमें से किसी के लिए उपबन्ध कर सकेंगे, अर्थात् :-

- (क)
- (ख)
- (ग)

.....

(घ) वे परिस्थितियाँ जिनमें एवं वो शर्तें और परिसीमाएँ जिनके अधीन भारत सरकार के किसी खोये, चोरी हो गये, विकृत या अपूर्ण करेन्सी नोट या बैंक-नोट का मूल्य प्रतिदत्त किया जा सकेगा।

2632 ५ ११०९-५

RESERVE BANK OF INDIA**NOTIFICATION**

Mumbai, the 13th July, 2009

F. No. -In exercise of the powers conferred by the proviso to section 28, read with clause (q) of the sub-section (1) and (2) of section 58, of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934) and in supersession of the Reserve Bank of India (Notes Refund) Rules, 1975, except as respect things done or omitted to be done before such supersession, the Central Board with the previous sanction of the Central Government, hereby makes the following rules for specifying the circumstances in, and the conditions and limitations subject to which, the value of lost, stolen, mutilated or imperfect note may be refunded as a matter of grace, namely:-

1. Short title, application and commencement :- (1) These rules may be called the Reserve Bank of India (Note Refund) Rules, 2009.

(2) They shall apply to a note, which is a legal tender on the date of its presentation before the Bank

(3) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions:-

In these rules, unless the context otherwise requires:-

(a) "Act" means the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934);

(b) 'Bank' means the Reserve Bank of India constituted by section 2 of the Act;

(c) "Bank note" means any note issued by the Bank, but does not include a Government note other than one rupees note, which has been deemed to be bank note as per the Notification no. G.S.R 426, dated the 28th March, 1980 issued by the Government of India, Ministry of Finance, Department of Economic Affairs;

(d) "essential features" means the features, including security features, which are necessary for the identification of a note, namely-

- (i) the name of the issuing authority in Hindi and/or English, that is; Bank or Government of India, as the case may be;
- (ii) the guarantee clause in Hindi and/or in English;
- (iii) the promise clause in Hindi and/or in English;
- (iv) the signature in Hindi and/or in English;
- (v) the Ashoka Pillar emblem or Mahatma Gandhi portrait, as the case may be; and
- (vi) the water-mark of the Ashoka Pillar emblem or Mahatma Gandhi portrait, as the case may be.

Explanation: For the purposes of this clause,

(A) the security features of a note, for deciding the genuineness or otherwise, include,

- (i) paper quality;
- (ii) size and shape of numbers;
- (iii) security Thread;
- (iv) intaglio printing;
- (v) latent Image in vertical band;
- (vi) electrotpe watermark (in watermark window);
- (vii) micro lettering;
- (viii) fluorescence (number panels and central band);
- (ix) optically Variable Ink (in rupee five hundred and rupee one thousand denominations);
- (x) see-through Register, and
- (xi) any other security feature that may be introduced by the Bank.

(B) the essential features of a note have been enumerated with a view to help the prescribed officer to establish the genuineness or otherwise of a mutilated note;

(e) "Government note" means any note issued by the Central Government or supplied by the Central Government to the Bank and issued by the Bank,

provided the liability for the payment of the value in respect of such note has devolved on and been taken over by the Bank;

(f) "imperfect note" means any note, which is wholly or partially, obliterated, shrunk, washed, altered or indecipherable but does not include a mutilated note;

(g) "mutilated note" means a note of which a portion is missing or which is composed of more than two pieces;

(h) "mismatched note" means a mutilated note which has been formed by joining a half note of any one note to a half note of another note:

Explanation: For the removal of doubts, it is hereby declared that a mismatched note can be identified on the basis of number, signature etc. and /or after examining other security features;

(i) "note" means a Bank note or a Government note;

(j) 'Prescribed Officer' means any officer of the Issue Department of the Bank or any officer of an agent of the Bank/ designated by the Bank by arrangement through agreement in this behalf as authorised to receive mutilated notes for adjudication under these rules;

(k) "soiled note:" means a note which, has become dirty due to usage and also includes a two piece note pasted together wherein both the pieces presented belong to the same note, and form the entire note.

(2) Words and expression used herein not defined but defined in the Act have the same meaning as assigned to them in the Act.

3. Decision on Adjudication of mutilated note- If any dispute arises in relation to adjudication of mutilated note the same shall be referred to the Bank for its decision and its decision shall be binding on the claimant, his nominees and legal heirs or representatives as the case may be .

4. Presentation and disposal of claim- A claim in respect of any note may be presented before the Prescribed Officer for adjudication and payment of value under these rules.

5. Right to call for information or to hold enquiries-The prescribed officer may, if it is considered necessary so to do, call for any information or hold any inquiry relating to any claim presented before him under these rules, and where the genuineness of the note is doubtful, he shall send such doubtful note for expert opinion to the General Manager, Currency Note Press, Nashik Road or to any other authority as designated under any law in force for this purpose.

6. General provisions in relation to all claims- (1) No claim in respect of a note, which is alleged to have been stolen, lost or wholly destroyed, shall be entertained.

(2) If the Prescribed Officer is satisfied that a mutilated note presented before him is one which appears to have been cancelled at any office of the Bank or the claim is one which appears to have already been paid under these rules, he may, after making enquiries under rule 5 above reject the claim on such note.

(3) A claim in respect of a note, which, -

- (i) cannot be identified with certainty as a genuine note for which the Bank is liable under the Act;
- (ii) has been made imperfect or mutilated, thereby causing the note to appear to be of a higher denomination, or has been deliberately cut, torn, defaced, altered or dealt with in any other manner, not necessarily by the claimants, enabling the use of the same for making of a false claim under these rules or otherwise to defraud the Bank or the public,
- (iii) carries any extrinsic words or visible representations intended to convey or capable of conveying any message of a political or religious character or furthering the interest of any person or entity;
- (iv) has been imported into India by the claimant from any place outside India in contravention of the provision of any law;
- (v) any information called for by the Prescribed Officer or the Bank, as the case may be, is not furnished by a claimant within a period of three months from the date of receipt of the notice or letter asking for the information, or

(vi) in the opinion of the Prescribed Officer, a deliberate fraudulent intention appears in respect of such a claim shall be rejected and shall not be eligible for consideration under any other Law for the time being in force.

7. Imperfect note - The value of an imperfect note may be paid for full value/half value as specified in the tables given in rule 8, if-

- (a) the matter, which is printed on the note has not become totally illegible, and
- (b) the Prescribed Officer is satisfied, having regard to the printed matter which is legible on the note, that it is a genuine note.

8. Mutilated notes- (1) The adjudication of claims in respect of notes of one rupee, two rupee, five rupee, ten rupee and twenty rupees denomination shall be made in the following manner, namely,

- (i) if the area of the single largest undivided piece of the note presented is more than 50 percent of the area of the respective denomination, rounded off to the next complete square centimetre, full value on mutilated notes of the above denominations shall be payable;
- (ii) If the area of the largest undivided piece of the note presented is less than or equal to 50 percent of the area of the note, the claim shall be rejected.

Explanation: For the purposes of this sub-rule, it is hereby clarified that the value of a mutilated note of one rupee, two rupee, five rupee, ten rupee and twenty rupees denomination may be refunded in full if the undivided area of the single largest piece of the note, as specified in the Table-1 below, presented is equal to or more than 31, 34, 38, 44, and 47 square centimetres (cms) respectively.

TABLE-1

Denomination	Length (centimetre)	Width (centimetre)	Area (in centimetre ²)	Minimum area (in centimetre ²) required for payment*
1	9.7	6.3	61	31
2	10.7	6.3	67	34
5	11.7	6.3	74	38
10	13.7	6.3	86	44
20	14.7	6.3	93	47

*Indicated as the next complete higher square centimeter after half of the area of the notes in a particular denomination.

(2) The payment of claim in respect of note of rupees fifty and above denominations shall be made in the following manner, namely-

(i) Full value of the mutilated notes of the above denominations shall be payable if the area of the single largest undivided piece of the note presented is more than 65 percent of the area of the respective denomination rounded off to the next complete square centimeter;

(ii) if the undivided area of the single largest undivided piece of the note presented is equal to or more than 40 percent and less than or equal to 65 percent of the area of the respective denomination rounded off to the next complete square centimeter, half the value of the note is payable.

(iii) If the area of the single largest undivided piece of the note is less than 40 percent, no value shall be payable, and the claim shall be rejected.

(iv) if the claim of mutilated notes of rupees fifty to rupees one thousand denomination notes consists of a note composed of two pieces of the same note and the two pieces, individually, have an area equal to or more than 40 percent of the total area of the note in that denomination, then the claim may be refunded for full value and need not be treated as consisting of two tenders for half value.

Explanation: For the purposes of this sub-rule, it is hereby clarified that, as specified in Table-2 below,-

- (a) if the area of the single largest undivided piece of the mutilated note of rupees fifty, rupees one hundred, rupees five hundred and rupees one thousand note presented is at least 70, 75, 80 and 84 square centimeters, respectively, the same may be paid for full value;
- (b) if the area of the largest undivided piece is less than as specified above, the claim may be considered for payment of half value as provided for at clause 2(ii) of sub-rule 8 above;
- (c) the value of a mutilated bank note of rupees fifty, rupees one hundred, rupees five hundred and rupees one thousand may be paid for half value, if the area of the single largest undivided piece of the note presented is at least or more than 43, 46, 49 and 52 square centimetres, respectively.
- (d) if the area of the single largest undivided piece is less than the above specification, the claim shall be rejected.

TABLE-2

Denomination	Length (cm)	Width (cm)	Area (in cm ²)	Minimum area (in cm ²) required for payment of full value [@]	Minimum area (in cm ²) required for payment of half value ^{**}
50	14.7	7.3	107	70	43
100	15.7	7.3	115	75	46
500	16.7	7.3	122	80	49
1000	17.7	7.3	129	84	52

[@] Rounded off to the next complete higher square centimeter of 65 % of the area of the note in a particular denomination.

^{**} Rounded off to the next complete higher square centimeter of 40 % of the area of the notes or 40% area of the note in a particular denomination.

9. Payment of claim in respect of mismatched note- The payment of claim in respect of a mismatched note may be dealt with as follows, namely,-

- (a) in case of notes upto rupees twenty denomination notes, the area of the larger of the two pieces presented may be measured and adjudicated as per the provisions of sub-rule (1) of Rule 8, ignoring the smaller half.

- (b) if none of the two pieces presented meets the minimum area stipulated as per the provisions of clause (i) of sub-rule 1 of rule 8 above, the claim shall be rejected.
- (c) in case of rupees fifty and above denominations, the two pieces may be treated as two separate claims and dealt with accordingly.

10. Claimants to be bound by rules- (1) Any payment which is provided under these rules shall be made only as matter of grace and the Bank may, as it deems fit, from time to time issue such supplementary or detailed instructions for carrying out the provisions of these rules, for the guidance of the Prescribed Officer.

(2) Any person who makes any claim on account of an imperfect note or mutilated note shall be deemed to have made the said claim under the proviso to section 28 of the Act and subject to the provisions of these rules, which shall be deemed to be binding on all claimants and their heirs or assigns.

11. Retention and destruction of note- Notwithstanding the denomination of a note or the decision of the Prescribed Officer on the claim, a note presented before the Prescribed Officer for the purpose of making a claim shall be retained and destroyed or otherwise disposed of by the Bank in the following manner, namely-

- (a) in the case of a note in respect of which full payment is made, at any time after the payment; and
- (b) in the case of a note in respect of which no payment is made, or on which half value payment has been made, on the expiry of a period of three months from the date of the decision rejecting the claim or to pay half-value, as the case may be, unless within this period, an order from a competent Court is submitted to any office of the Bank or branch of the designated bank restraining the Bank from destroying or otherwise disposing of the said note.

263248/05-6

12. Payment to Legal heirs or nominees- (1) If a claimant who has submitted a claim under these rules, is dead, his legal representatives shall be eligible to receive the payment due to the claimant subject to the determination of the claim by the Prescribed Officer.

(2) The legal representatives shall be entitled to receive the payment due to the claimant, if any, upon furnishing to the Prescribed Officer an indemnity bond executed by the legal representative in favour of the branch or office of the Bank or any other institution or entity as designated by the Bank for this purpose;

Provided payment upto an amount of rupees five hundred may be made to the legal heir of the claimant on a declaration for this purpose.

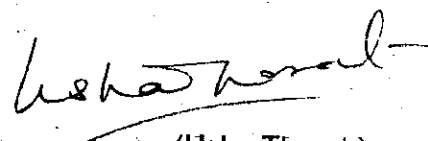
(3) In case of mutilated note presented at the Bank through Triple Lock Receptacle (TLR) cover, the tenderer shall indicate his name and address alongwith other details, such as, bank account number, etc. as specified on the cover, and the individual tenderers, may, at their option, in addition, also indicate on the cover, the name and address of the nominee who may receive the amount that is determined to be due on the claim without production of indemnity, subject to proper identification.

13. Printed Forms- Where any indemnity bond as referred to in rule 12 is to be executed in favour of the Bank a printed copy of the bond shall be supplied free of cost to the claimant or the person eligible to receive the payment under these rules.

14. Stamp Duty- The value of the stamp duty on the indemnity bond shall be paid by the person executing the bond.

15. Procedure when payee is untraced- (1) In case of the note having been adjudicated at the office of the Bank, the value or part of the value of a note is payable to the claimant and if such claimant, is not found or is dead, his legal representatives or the nominee specified by him cannot be found or fails within a period of three months from the date of communication to him the decision to take steps to receive payment, the amount payable shall be paid to the Banking Department of the Bank

(2) In case of the mutilated note having been adjudicated at the branch of designated bank or other entities, such payment may be credited with the Issue Office of the Bank after a period of three months from the date of communication to the tenderer of the decision to take steps to receive the exchange value.



(Usha Thorat)

Deputy Governor

Reserve Bank of India

Central Office

Central Office Building

Fort, Mumbai

M. RAJESHWAR RAO, General Manager

[ADVT.-III/4/Exty./93/09/]

Reserve Bank of India (Note Refund) Rules, 2009

Part I

Introduction

The Reserve Bank has been extending facilities to the public for exchanging cut and mutilated notes at all its Issue Offices and currency chest branches of commercial banks. In order to make the Note Refund Rules easy to understand and to apply, these have been comprehensively revised and simplified. It has also been decided that any officer of the designated branch can adjudicate mutilated notes presented thereat. It is hoped that simplification and liberalisation of the Rules would help both, the prescribed officers as well as the tenderers of mutilated notes to easily comprehend the revised Rules and enable the former to apply the Note Refund Rules without leaving any scope for subjectivity.

While the facility for exchange of soiled notes is to be provided by all banks at all of their branches, the facility of exchange of mutilated notes would be available at designated bank branch/es (including cooperative banks and RRBs) to all tenderers whether they are account holders or not. This is a duty that the banking system as a whole owes to the public. It needs no emphasis that the object of simplification of RBI Note Refund Rules and its extension is

to help members of the public exchange the cut/mutilated notes in their possession without difficulty. The designated bank branches should play an active role and ensure that the facility is operated for the benefit of the members of public at large and is not pre-empted by a group of persons.

This booklet contains Rules and Procedures to be followed under the Scheme. The procedure required to be followed by the branches for acceptance, adjudication, and maintenance of records of mutilated notes is also laid down in this booklet. All further instructions to be issued on the subject will be with reference to this booklet and branches of the banks shall update the booklet by making necessary amendments to it. If any clarification is needed on the scheme, a reference should be made either to the Issue Department of the Reserve Bank of India at its offices or the Chief General Manager, Reserve Bank of India, Central Office, Department of Currency Management, Mumbai – 400 001 (e-mail address cgmindcm@rbi.org.in or helpdcm@rbi.org.in).

Part II:

Reserve Bank of India (Note Refund) Rules 2008 with explanations:

A. Provisions in the Reserve Bank of India Act, 1934:

Section 28: Notwithstanding anything contained in any enactment or rule of law to the contrary, no person shall of right be entitled to recover from the Central Government or the Bank, the value of any lost, stolen, mutilated or imperfect currency note, provided that the Bank may, with the previous sanction of the Central Government, prescribe the circumstances in and the conditions and limitations subject to which the value of such currency notes or bank notes may be refunded as of grace and the rules made under this proviso shall be laid on the table of Parliament.

Section 58(1): The Central Board may, with the previous sanction of the Central Government, by notification in the Official Gazette, make regulations consistent with this Act to provide for all matters for which provision is necessary or convenient for the purpose of giving effect to the provisions of this Act.

Section 58 (2): In particular and without prejudice to the generality of the foregoing provisions, such regulations may provide for all or any of the following matters, viz.-

(a)

(b)

(c)

.....

(q) the circumstances in which, and the conditions and limitations subject to which the value of any lost, stolen, mutilated or imperfect currency note of the Government of India or bank note may be refunded.